Dr. AMAR KRISHNA
Dept. of Economics.
S.R.A.P College, Barachakia

Das Kapital = 25 वर्ष

Q:→ मूल्य का निर्धारण न तो सिर्फ माँग के द्वारा न ही पूर्ति के द्वारा बल्कि दोनों की अन्तर क्रिया के द्वारा निर्धारित होता है। विवेचना करें।

Ans.→ स्टोनी ने ठीक ही कहा है – यदि उत्पादन अर्थशास्त्र का प्रारम्भ और उपभोग उसका अंत है तो मूल्य की धारणा उसका दिल है "Cost is the heart of economics" अर्थात् मूल्य की धारणा दिल के समान ही नाजुक एवं जटिल है जिसके सम्बन्ध में प्रारंभ से अर्थशास्त्रियों में मतभेद रहा है। इसके बावजूद यदि अर्थशास्त्र की धारणा से मूल्य की धारणा निकाल दी जाए तो सम्पूर्ण आर्थिक अध्ययन निष्प्राण हो जाएगा।

अध्ययन की सुविधा के लिए हम मूल्य के सम्बन्ध में दिये गये विभिन्न सिद्धान्तों का अध्ययन तीन भागों में बाँटकर करते हैं

(i) शास्त्रीय सिद्धान्त
(ii) उपयोगितावादी सिद्धान्त
(iii) आधुनिक सिद्धान्त

(1) शास्त्रीय सिद्धान्त – मूल्य निर्धारण का शास्त्रीय सिद्धांत उस सिद्धान्त को कहते हैं, जिसमें Adam Smith से लेकर J.S. Mill तक सभी अर्थशास्त्री किसी न किसी रूप में मान्यता देते हैं। इसे मूल्य का उत्पादन लागत सिद्धान्त भी कहते हैं। "Cost of Production theory of value" क्योंकि यह सिद्धान्त यह मानता है कि किसी भी वस्तु का मूल्य उसके उत्पादन लागत के बराबर होता है। इस सिद्धान्त को Ricardo का मूल्य सिद्धान्त भी कहते हैं, क्योंकि इस सिद्धान्त के मूल प्रतिपादन एवं प्रणेता Ricardo महोदय थे। इसे श्रम सिद्धां भी कहते हैं। क्योंकि Ricardo एवं Karlmarx ने लागत को श्रम की इकाई के रूप में ही माना। प्रसिद्ध समाजवादी चिन्तक Karlmarx ने अ पुस्तक - Das Kapital में श्रम सिद्धान्त विश्लेषण मूल्य का श्रम सिद्धांत ही कह कर

lahour
101का

आंशिक रूप से सत्य होते हुए भी यह सिद्धान्त आज अर्थशास्त्रियों के बीच पूर्णतः अस्वीकार हो चुका है। उसके निम्न कारण है।

(i) यह सिद्धान्त पक्षीय है क्योंकि यह पूर्ति पक्ष पर ध्यान देता है और मांग पक्ष की अवहेलना करता है।

(ii) यह सिद्धान्त अपूर्ण है क्योंकि यह उत्पादन लागत पर ध्यान देता है, किन्तु उसकी प्राप्त उपयोगिता को नजरअन्दाज कर देता है। उदाहरण के लिए: एक ऐसे मशीन की कल्पना कर सकते हैं जिसका उत्पादन 5000 रुपया है, उसका काम सिर्फ हल्ला करना है दूसरी ओर उसका लागत व्यय ~~रु~~ 5000 रु अतः रिकार्डो के अनुसार उसका मूल्य 5000 रुपया होना चाहिए। क्योंकि लागत मूल्य 5000 रुपया है परन्तु उपयोगिता शून्य होने के कारण उसका ~~कु~~ कुछ भी मूल्य नहीं होगा।

(iii) शास्त्रीय अर्थशास्त्री ने cost को श्रम की इकाई के रूप में मापा है जबकि यह मूल्य का सही मापक नहीं है। श्रम अपने आप में कोई वास्तविक धारणा नहीं है। Karlmarx का socially necessary ~~labour~~ lahour time की धारणा भी हमें अनिश्चितता और निर्णयहीनता की दल-दल में धकेल देती है।

(iv) उत्पादन लागत का सिद्धांत इस बात की चर्चा करने में सर्वदा असमर्थ है कि एक ही खान से निकाले जाने के बावजूद कोयला का रंग काला तथा मूल्य कम है परन्तु हीरा का रंग चमकीला तथा मूल्य अधिक है।

(v) संयुक्त उत्पादन वाली वस्तु का अलग-अलग उत्पादन लागत असम्भव नहीं तो दुष्कर अवश्य है।

(vi) प्राचीन एवं दुर्लभ वस्तुओं के मूल्य की व्याख्या उत्पादन लागत के आधार पर नहीं हो सकती, जैसे कि अकबर के समय का सिक्का या रानी विक्टोरिया के समय का डाक टिकट।

इस तरह रिकार्डो का उत्पादन लागत का सिद्धान्त आंशिक रूप से सत्य होने के बावजूद अपनी पूर्णता में गलत है।

(2) उपयोगिता वादी सिद्धान्त :-

मूल्य निर्धारण का दूसरा सिद्धांत Prof. Jevons ने प्रस्तुत किया। इसे मूल्य निर्धारण का उपयोगितावादी सिद्धान्त भी कहा जाता है। Prof. Jevons के अनुसार किसी वस्तु का मूल्य उससे प्राप्त उपयोगिता के बराबर होती है। उदाहरण के लिए यदि आम से हमें दो रुपये के बराबर उपयोगिता मिलती है। उसका मूल्य हम दो रुपया देते हैं यदि दो से अधिक मूल्य मांगा जाता है, तो उसका क्रय नहीं करते। Ricardo के सिद्धान्त के समान ही Jevons का उपयोगितावादी सिद्धांत भी आंशिक दृष्टिकोण से सत्य होने के बावजूद अपनी पूर्णता में असत्य है। यह निम्न कारणों से स्पष्ट होता है।

(i) यह सिद्धान्त एक पक्षीय है क्योंकि यह माँग पक्ष पर ध्यान देता है और पूर्ति पक्ष की अवहेलना करता है।

(ii) यह सिद्धान्त अपूर्ण है क्योंकि यह वस्तुओं से प्राप्त उपयोगिता पर ध्यान देता है किन्तु उत्पादन लागत पक्ष की उपेक्षा कर देता है। उदाहरण के लिए Jevons के सिद्धान्त के अनुसार सबसे अधिक मूल्य तो हवा और पानी का होना चाहिए। क्योंकि इससे सर्वाधिक उपयोगिता मिलती है फिर भी हम जानते हैं कि इसका कुछ भी मूल्य नहीं होता क्योंकि इसका लागत-व्यय शून्य है।

(iii) यह भी स्पष्ट नहीं होता है कि मूल्य किसी उपयोगिता के बराबर होगा। सीमान्त उपयोगिता या औसत उपयोगिता की धारणा स्वयं आत्मनिष्ट और परिवर्तनशील है। वस्तु की उपभोग की मात्रा घटने-बढ़ने के साथ-साथ उससे प्राप्त उपयोगिता भी घटती बढ़ती है। साथ-साथ यह Psycho-Phenomenon अतः

mether
25वाँ

वस्तुनिष्ठ मापक नहीं हो सकता।

(3) आधुनिक सिद्धान्त :-

Prof. Marshall ने 1890 ई० में प्रकाशित अपनी पुस्तक Principles of Economics में दोनों ही सिद्धान्तों को अपूर्ण और एकांगी बतलाते हुए मूल्य निर्धारण का आधुनिक सिद्धान्त दिया। हम जानते हैं कि Marshall महोदय आर्थिक विचारधारा के इतिहास में एक महान समन्वयकारी के रूप में जाने जाते हैं। मूल्य सिद्धान्त में उनके सम्बन्धवादी दृष्टिकोण की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है।

Prof. Marshall ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि मूल्य का निर्धारण न तो सिर्फ माँग के द्वारा होता है और न ही पूर्ति के द्वारा होता है। उसका निर्धारण दोनों ही अन्तः क्रिया के बराबर होती है।

Price is to determined ~~wather~~ mether by demand nor by supply but by mutual ~~Enter ection~~ interaction of the two. (Marshall).

Prof. Marshall ने बतलाया कि मूल्य निर्धारण में माँग पक्ष जिसका सम्बन्ध उपयोगिता से है और पूर्ति पक्ष जिसका सम्बन्ध लागत पक्ष से है। दोनों ही भूमिका होती है अतः माँग पक्ष और पूर्ति पक्ष दोनों का विश्लेषण अलग-अलग हो जाता है।

(i) माँग पक्ष — माँग पक्ष के नियम के आधार पर हम जानते हैं कि जैसे-जैसे मूल्य में कमी होती है, माँग बढ़ती है और उसका मूल्य भी (तल्प) होता है अर्थात् मूल्य में वृद्धि होने पर माँग में कमी आती है यह उदाहरण रेखाचित्र (1) और (ii) से स्पष्ट है।

(V2

अ

के

प्रतिकलम मूल्य	कलम की मांग
1	10,000
2	9,000
3	8,000
4	7,000
5	6,000
6	5,000
7	4,000

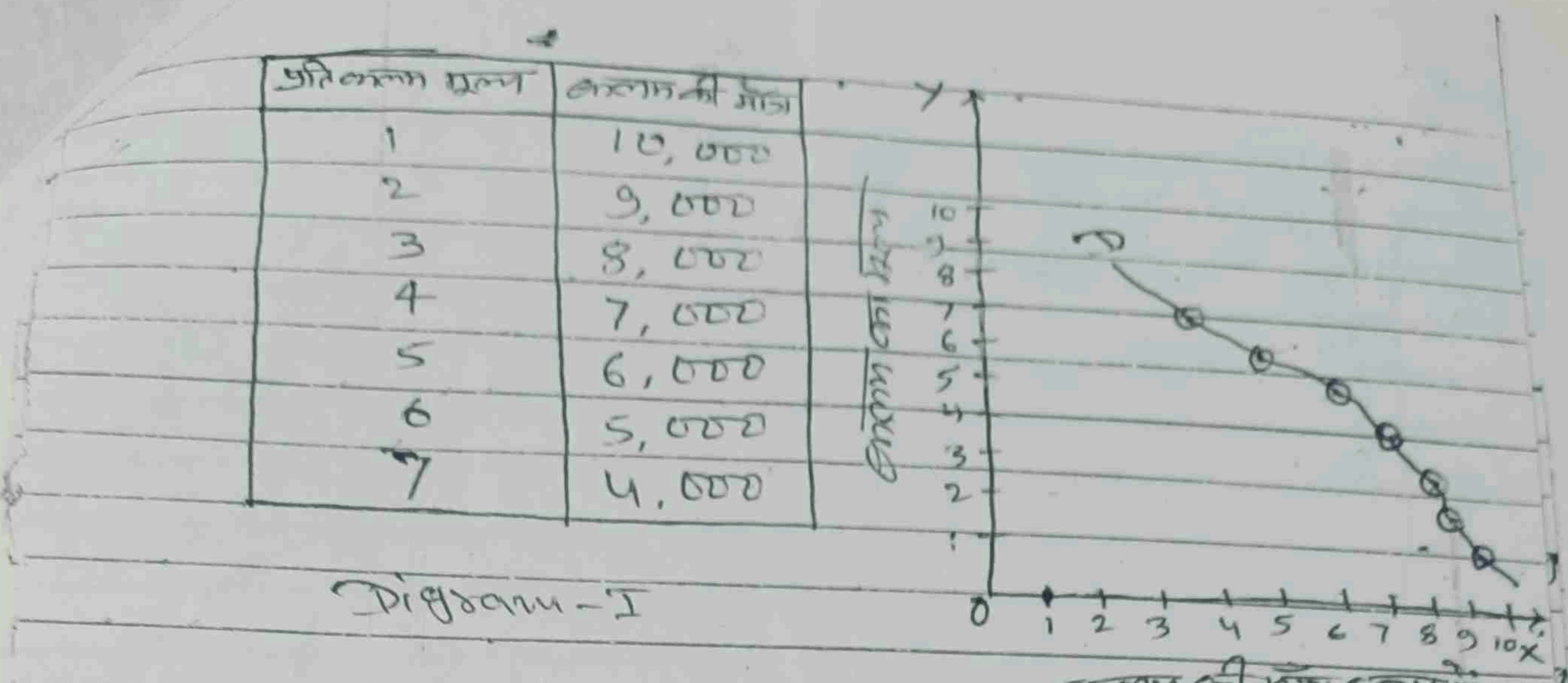

Diagram - I

पूर्ति पक्ष :- पूर्ति के नियम से हम जानते है कि जैसे-जैसे मूल्य में वृद्धि होती है पूर्ति बढ़ती है और मूल्य में कमी होने से पूर्ति घटती है। यह उदाहरण निम्न रेखाचित्र से और स्पष्ट हो जाता है।

कलम का मूल्य	कलम की पूर्ति
1 रुपया	4,000
2 "	5,000
3 "	6,000
4 "	7,000
5 "	8,000
6 "	9,000
7 "	10,000

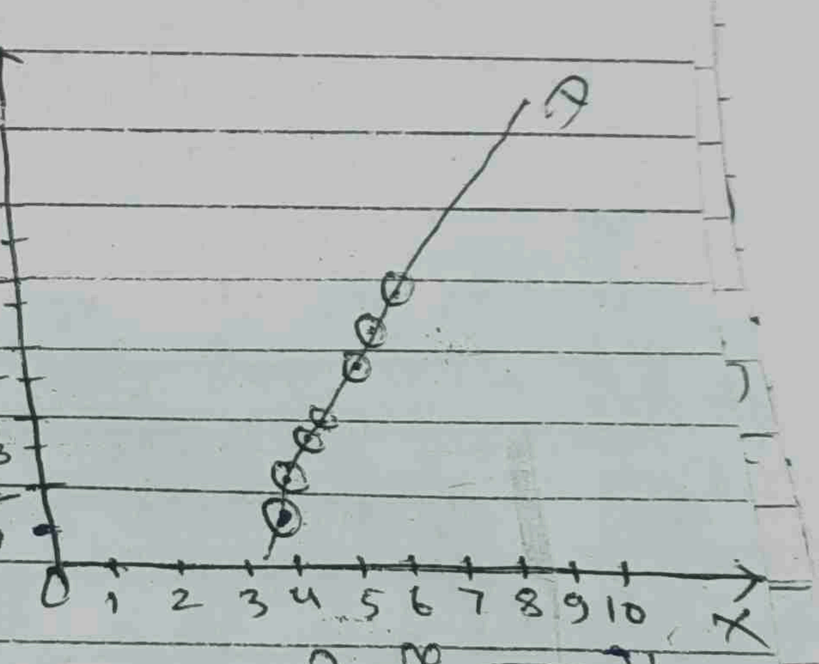

Diagram - II

मार्शल के अनुसार स्थायी संतुलन मूल्य उस बिन्दु पर निर्धारित होता है जहाँ मांग और पूर्ति पक्ष दोनों बराबर होता है। जैसा कि चित्र (III) से स्पष्ट है।

कलम का मूल्य	कलम की माँग	कलम की पूर्ति
1 रुपया	10,000	4,000
2 "	9,000	5,000
3 "	8,000	6,000
4 "	7,000	7,000
5 "	6,000	8,000
6 "	5,000	9,000
7 "	4,000	10,000

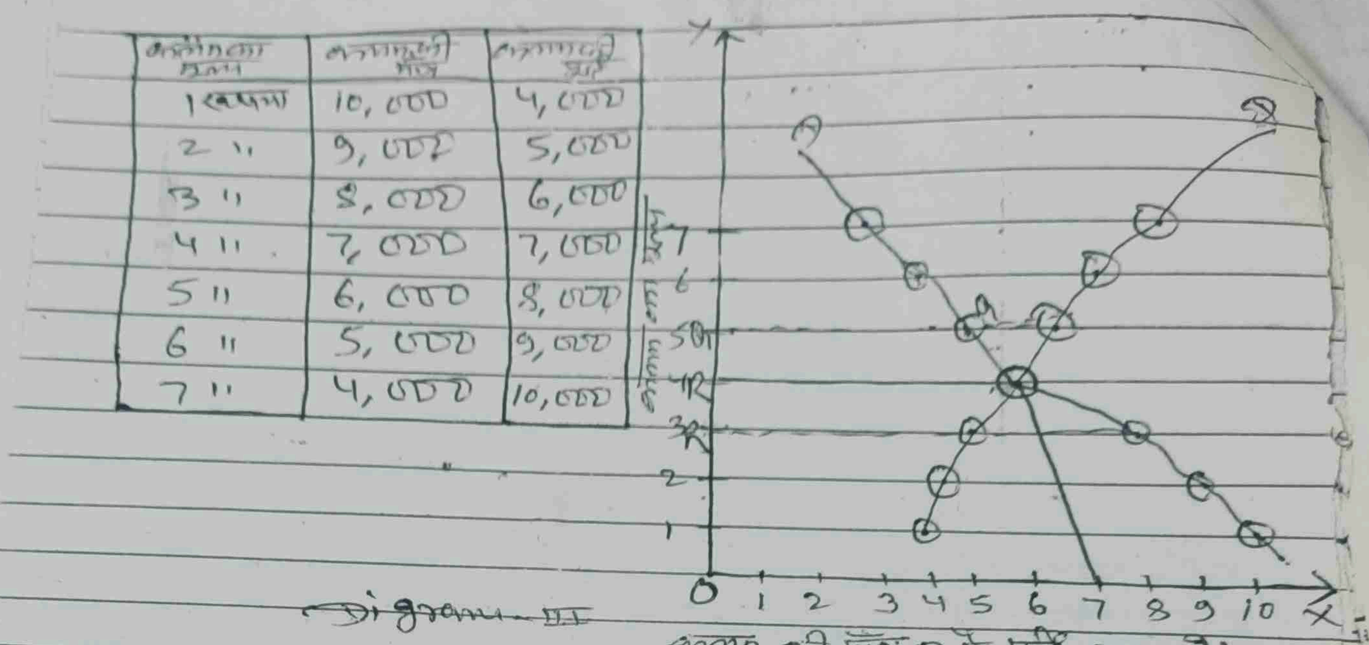

Diagram — III

यहाँ OX रेखा पर वस्तु की माँग और पूर्ति की मात्रा को बतलाता है और OY पर कलम का मूल्य। P वह बिन्दु है जहाँ माँग और पूर्ति आपस में बराबर होती है। अतः OP संतुलित मूल्य होगा और वस्तु की संतुलित माँग और पूर्ति की मात्रा O होगी, जो माँग पक्ष और पूर्ति पक्ष के अन्तः क्रिया द्वारा निर्धारित होती है यदि मूल्य का निर्धारण P से अधिक होता है तो इसका अर्थ होता है पूर्ति का अधिक होना और माँग का कम। फलस्वरूप कालान्तर में उत्पादक उत्पादन बन्द कर देगा। और OP पर माँग तथा पूर्ति का समायोजन होगा। इस तरह, मूल्य OR से R बिन्दु पर रखते हैं तो माँग अधिक होगी और पूर्ति कम। कालान्तर में माँग के अनुरूप पूर्ति की मात्रा बढ़ेगी और अन्त में OP पर दोनों में समायोजन होगा।

इसी तरह P से कम या अधिक पर स्थायी संतुलन होगा और स्थायी मूल्य OP होगा।

मार्शल ने अपने विश्लेषण को स्पष्ट करने के लिए, कैंची का उदाहरण दिया है। जिस तरह हम यह कभी नहीं कह सकते हैं कि कपड़ा ऊपर वाली पत्ती से कटा या नीचे वाली पत्ती से। उसी तरह, हम यह भी नहीं कह सकते की मूल्य का निर्धारण सिर्फ उपयोगिता जिसका सम्बन्ध

माँग पक्ष से है या सिर्फ उत्पादन लागत जिसका सम्बन्ध पूर्ति पक्ष से होता है, के द्वारा होता है।

मूल्य निर्धारण उस बिन्दु पर होता है, जहाँ माँग पक्ष और पूर्ति पक्ष दोनों मिलते हैं। उसी तरह, जैसे कपड़ा उसी स्थिति में कटता है जब ऊपर वाली और नीचे वाली पत्ती दोनों आपस में मिलती है। भले ही जब कभी हम ऊपर वाली पत्ती को काटते हैं या नीचे वाली पत्ती को, लेकिन कपड़ा ~~कट~~ काटने के लिए दोनों के बीच अन्तर क्रिया आवश्यक है।

Marshall के शब्दों में — Just as we cannot say whether it is the upper or the lower blade of a pair of scissors cuts a piece to clothes so, we cannot say whether demand (depending on utility) alone or supply (depending upon cost of production) alone determines value.

मार्शल ने अपने कथन को और भी स्पष्ट करते हुए कहा है कि — "Just as there can be no cutting until the two blades meet so, there can be no value until supply meets demand".

जिस बिन्दु पर वह दोनों मिलते हैं, वह संतुलन बिन्दु है और उस बिन्दु पर संतुलन मूल्य का निर्धारण होता है।

मार्शल ने अपने विश्लेषण में और भी अधिक महत्वपूर्ण बातें बताते हुए कहा है कि "जितना ही कम समय होता है पूर्ति पक्ष की तुलना में माँग पक्ष अधिक महत्वपूर्ण होता है और जितना ही अधिक समय होता है, माँग पक्ष की तुलना में पूर्ति पक्ष अधिक महत्वपूर्ण होता है। मोल-तोल (Heggling and ~~Hegg~~ bargaining) के कारण कभी मूल्य संतुलन मूल्य से कम या अधिक हो सकता है किन्तु उसकी स्थायी प्रवृत्ति संतुलन मूल्य के बराबर होने की होती है। जिस तरह Badminton के खेल हम सरल कार्क को कभी Bat से, कभी उस पर और कभी उस पर करते हैं, उसी

तरह माँग और पूर्ति में परिवर्तन या मोल-जोल के कारण मूल्य उसी बिन्दु पर निर्धारित होता है जहाँ माँग और पूर्ति पक्ष एक-दूसरे से मिलते हैं।

इस तरह, मार्शल का यह कथन सर्वदा सत्य है कि मूल्य का निर्धारण न तो सिर्फ माँग के द्वारा होता है और न ही सिर्फ पूर्ति के द्वारा। उसका निर्धारण दोनों की अन्तर क्रिया के द्वारा होता है। उन्हीं के शब्दों में —

"Price is ~~better mined~~ determined neither by deman nor by supply ~~but~~ but by mutual interactio of the two".